एक उचित आहार योजना निर्धारित करना

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र-II (शासन व्यवस्था, सामाजिक मुद्दे) से संबंधित है।

द हिन्दू

लेखक- शैलेंद्र कुमार हुड्डा, रबीउल अंसारी (एसोसिएट प्रोफेसर, इंडस्ट्री फॉर स्टडीज इन इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट, नई दिल्ली)

15 नवम्बर, 2018

''कुपोषण से निपटने के लिए, खाद्य कीमतों को विनियमित किया जाना चाहिए और पीडीएस को विकसित और गरीब दोनों राज्यों में मजबूत किया जाना चाहिए।''

दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक होने के बावजूद, ग्लोबल हंगर इंडेक्स-2018 में भूख के स्तर को 'गंभीर' के रूप में वर्गीकृत किया गया है, भारत को 119 देशों में से 103वाँ में स्थान दिया गया है। आश्चर्यजनक रूप से जुलाई में तीन लड़कियों ने भुखमरी से अपना दम तोड़ दिया, जो राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में लंबे समय से चले आ रहे कुपोषण की समस्या का परिणाम है और इससे भी ज्यादा आश्चर्य की बात यह है कि दिल्ली में यह समस्या प्रति व्यक्ति आय उच्च होने के बावजूद है।

भारत का बाल कुपोषण स्तर न केवल दुनिया में सबसे ज्यादा है बल्कि इसके खुद के राज्यों में भी भिन्न-भिन्न है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-2016 के अनुसार, पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों में स्टंटेड (उम्र के हिसाब से कम ऊंचाई) का अनुपात वैश्विक (22.9%) औसत से काफी अधिक (38.4%) है।

अंडरवेट (उम्र के हिसाब से कम वजन) बच्चों की दर (35.7%) वैश्विक औसत (13.5%) से भी काफी अधिक है। आंकड़ों के अनुसार, भारत पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की श्रेणी में 53.3 मिलियन से अधिक स्टंटेड बच्चों, 49.6 मिलियन कम वजन वाले बच्चों और 29.2 मिलियन कमजोर (ऊंचाई या कम वजन वाले) बच्चों का घर है।

बड़ी चुनौतियां

बढ़ती समृद्धि ने बच्चों में कुपोषण की पुरानी समस्या में शायद ही कोई महत्वपूर्ण मदद की है। तेजी से बढ़ते आर्थिक विकास के कई लाभ हैं, लेकिन यह पर्याप्त और टिकाऊ नहीं है क्योंकि यदि लाखों बच्चे कमजोर रहते हैं तो यह न केवल कम उम्र के बच्चों के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है और बीमारी का बोझ और बढ़ता है, बल्कि शिक्षा को भी प्रभावित करता है और साथ ही जब वे बड़े होते हैं तो मजदूरी और उत्पादकता को भी प्रभावित करता हैं, जो भारत के विकास को भी प्रभावित करेगा।

एक समस्या विकास उन्मुख विकास की वर्तमान सोच के साथ निहित है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि कम आय और अधिकारित कार्य-समूह (ईएजी) राज्यों में कुपोषण में सुधार के लिए बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, लेकिन दो ईएजी राज्य, छत्तीसगढ़ और ओडिशा ने गुजरात और महाराष्ट्र की तुलना में इस मोर्चे पर बेहतर प्रदर्शन किया है, जहां प्रति व्यक्ति आय लगभग डबल है।

गुजरात में प्रचलित विकास पथ विकास और निवेश के बारे में अधिक है, हालांकि, यह राज्य में बेहतर पोषण संबंधी स्थिति के रूप में परिवर्तित करने में सफल नहीं हो सका है। ओडिशा, जो कम आय वाला राज्य है, में एकीकृत बाल विकास सेवाओं (आईसीडीएस), सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधा/प्रति लाख कर्मचारियों की श्रमिकों और महिलाओं के बीच शैक्षिक प्राप्ति का बेहतर नेटवर्क है, जिसने गुजरात की तुलना में बेहतर पोषण संबंधी स्थिति में परिवर्तन करके दिखाया है। इसके अलावा, हरियाणा, गुजरात और पंजाब के तथाकथित विकसित राज्यों में जनजातीय, ग्रामीण, गरीब और अशिक्षित मां के बच्चों की स्थिति और भी दयनीय है। ये समूह यूपी, बिहार, झारखंड और मध्य प्रदेश के गरीब राज्यों में भी दयनीय स्थिति में हैं। लगभग दो-तिहाई स्टंटेड/अंडरवेट बच्चे कम विकसित और विकसित दोनों राज्यों के 200 जिलों में से हैं।

कृषि बनाम भूख

कृषि और पोषण को जोड़ने की जरूरत एक और प्रमुख विचार है, क्योंकि कृषि अधिकांश पोषण समस्याओं का एकमात्र जवाब है। हालांकि, हमारे अनुमानों से पता चलता है कि कृषि अधिशेष राज्यों में भी कुपोषण जारी है, उदाहरण के लिए हरियाणा जहाँ 34% बच्चे स्टंटिंग और 29.5% बच्चे कम वजन से ग्रसित है।

चिंताजनक बात यह है कि इसके कुछ कृषि-विकसित जिलों (करनाल, पानीपत, सोनीपत, रोहतक के साथ-साथ गुरुग्राम में भी) में कुपोषण ओडिशा के औसत से भी अधिक है। हाल ही में, मध्य प्रदेश में अनाज उत्पादन में दो अंकों की वृद्धि दर्ज की गयी है, जो इसे भारत में अधिक गेहूं उत्पादन करने वाले राज्यों की श्रेणी में शामिल करता है, लेकिन इसके अधिकांश जिलों में गंभीर कुपोषण की समस्या अभी भी महत्वपूर्ण है जिसमें अंडरवेट बच्चों का प्रतिशत 42.8% और स्टंटेड बच्चों का प्रतिशत 41.9% है।

कृषि प्रचुरता और कुपोषण के बीच विरोधाभास को समझने के लिए, हमें विविध भोजन का उदाहरण लेना होगा। भोजन के सेवन में विविधता में वृद्धि के साथ, सभी 640 जिलों में कुपोषण (स्टंटेड/अंडरवेट) की स्थिति में 19 खाद्य पदार्थों का उपयोग करके खाद्य सेवन सूचकांक के माध्यम से मापा जाता है। केवल 12% बच्चों का ही उन क्षेत्रों में स्टंटेड और अंडरवेट से ग्रसित होने की संभावना है जहां खाद्य सेवन में विविधता अधिक है, जबकि लगभग 50% बच्चों का स्टंटेड होने की संभावना हैं यदि वे तीन से कम खाद्य पदार्थों का उपभोग करते हैं।

तमिलनाडु के जिलों में अधिकांश बच्चों का उचित रूप से अत्यधिक विविध भोजन होता है, जिससे जिलों में स्टंटेड/अंडरवेट बच्चों का कम प्रतिशत होता है। पश्चिम बंगाल, ओडिशा, केरल और कर्नाटक के अधिकांश जिलों में बच्चे खाद्य वस्तुओं के औसत स्तर का उपभोग करते हैं और कुपोषण राजस्थान, यूपी, झारखंड, एमपी, गुजरात, बिहार और हरियाणा की तुलना में अपेक्षाकृत कम है (उनके कई जिलों में बच्चे विविध भोजन का कम उपभोग करते हैं)। अधिकांश भारतीय जिलों में विविध भोजन का सेवन बहुत कम है; कुल 19 खाद्य वस्तुओं के पांच वस्तुओं में से केवल 28% बच्चे खपत करते हैं।

आगे बढ़ने का रास्ता

खाद्य मूल्य को नियंत्रित/विनियमित करने, सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) को मजबूत करने और खाद्य सस्ता बनाने के लिए आय समर्थन नीतियों सहित एक समावेशी और समग्र दृष्टिकोण महत्वपूर्ण कदम हैं।

आईसीडीएस एक उच्च प्रभाव पोषण हस्तक्षेप था, लेकिन इसकी सार्वभौमिक उपलब्धता और गुणवत्ता खराब कामकाज के कारण संदिग्ध है। सरकार को सबसे ज्यादा प्रभावित जिलों में खाद्य पदार्थों में विविधता सुनिश्चित करके आईसीडीएस कार्यक्रम को विस्तारित करना होगा।

मातृ एवं शिशु कुपोषण से लड़ने की रणनीति के रूप में राष्ट्रीय पोषण मिशन का शुभारंभ 2022 तक 35.7% से 20.7% और 38.4% से 25% तक पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों और कमजोर बच्चों के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक स्वागत कदम है। लेकिन पोषण घटकों के प्रति निरंतर बजटीय प्रतिबद्धता तेजी से दिखाई नहीं दे रही है।

GS World टीम...

ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2018

संदर्भ

- हाल ही में ग्लोबल हंगर इंडेक्स रिपोर्ट-2018 जारी की गई है।
- रिपोर्ट के अनुसार भारत में अब भी काफी भुखमरी मौजूद है। ग्लोबल हंगर इंडेक्स-2018 में कुल 119 देशों को शामिल किया गया जिसमें भारत 103वें पायदान पर है।
- भारत नेपाल और बांग्लादेश जैसे देशों से पीछे है, लेकिन पाकिस्तान से आगे है।
- पाकिस्तान इस रिपोर्ट में 106वें स्थान पर मौजूद है जबकि भारत पिछले वर्ष 100वें स्थान पर था। रिपोर्ट के अनुसार विश्व में 68 मिलियन लोग रिफ्यूजी कैंप में रहने को मजबूर हैं।

क्या है?

- ग्लोबल हंगर इंडेक्स में विश्व के विभिन्न देशों में खानपान की स्थिति का विस्तृत ब्योरा दिया जाता है।
- इसमें यह देखा जाता है कि लोगों को किस तरह का खाद्य पदार्थ मिल रहा है, उसकी गुणवत्ता और मात्रा कितनी है और उसमें कमियां क्या हैं?
- प्रत्येक वर्ष अक्टूबर में यह रिपोर्ट जारी की जाती है।
- ग्लोबल हंगर इंडेक्स की शुरुआत वर्ष 2006 में इंटरनेशनल फूड पॉलिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट ने की थी।
- वेल्ट हंगरलाइफ नाम के एक जर्मन संस्था ने 2006 में पहली बार ग्लोबल हंगर इंडेक्स जारी किया था।
- 2018 में इस रिपोर्ट का 13वां एडिशन है।

पिछले वर्षों में ग्लोबल हंगर इंडेक्स में भारत

- वर्ष 2014 के बाद से ग्लोबल हंगर इंडेक्स में भारत की रैंकिंग में लगातार गिरावट आई है।
- वर्ष 2014 में भारत जहां 55वें पायदान पर था, तो वहीं 2015 में 80वें, 2016 में 97वें और पिछले साल 100वें पायदान पर आ गया।
- वर्ष 2018 की रैंकिंग में भारत पिछले वर्ष की तुलना में तीन पायदान और गिरकर 103वें स्थान पर आ गया है।

प्रमुख तथ्य

- इस रिपोर्ट के अनुसार विश्व में कुपोषित बच्चों की संख्या में कमी दर्ज की गई है।
- वर्ष 1999-2001 में कुपोषित बच्चों की संख्या 17.6% थी, जबकि वर्ष 2015-17 में यह कम होकर 12.3% पर पहुँच गयी है।
- 1999-2001 में बच्चों की ग्रोथ का आंकड़ा 37.1% था, जबकि 2013-17 में यह कम होकर 27.9% पर पहुँच गया।
- ग्लोबल हंगर इंडेक्स में बेलारूस टॉप पर है जबकि चीन 25वें, बांग्लादेश 86वें, नेपाल 72वें, श्रीलंका 67वें और म्यांमार 68वें स्थान पर है।
- वर्ष 2018 के सूचकांक के अनुसार जिम्बाब्वे तथा सोमालिया में कुपोषण दर सबसे अधिक 46.6 से 61.8% है।
- बच्चों की वृद्धि दर सबसे कम तिमोर-लेस्ते, इरीट्रिया तथा बुरुंडी में दर्ज की गई है।
- भूख के कारण चाड, हैती, मेडागास्कर, सिएरा लिओन, यमन तथा जाम्बिया में हिंसक हालात बताए गये हैं।

GS World Committed to Excellence

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. हाल ही में जारी की गयी ग्लोबल हंगर इंडेक्स-2018 के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. यह रिपोर्ट वाशिंगटन स्थिति अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान द्वारा गैर-सरकारी संगठन की सहायता से जारी किया जाता है।
2. इस सूचकांक के निर्धारण चार संकेतकों पर आधारित है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

2. ग्लोबल हंगर इंडेक्स-2018 में भारत के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन असत्य है/हैं?

1. इसके अनुसार भारत को भूख के स्तर को 'गंभीर' की श्रेणी में रखा गया है।
2. इसके अनुसार भारत का बाल कुपोषण का स्तर विश्व में सबसे ऊंचा है।
3. भारत में अंडरवेट (आयु के अनुसार वजन नहीं) बच्चों की दर वैश्विक स्तर से कम है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर दीजिए-

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 3
(d) केवल 1 और 3

3. ग्लोबल हंगर इंडेक्स-2018 में भारत की रैंकिंग निम्नलिखित में से कौन-सी है?

(a) 103वीं
(b) 119वीं
(c) 100वीं
(d) 90वीं

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. हाल ही में जारी ग्लोबल हंगर इंडेक्स-2018 में भारत की स्थिति 'गंभीर' श्रेणी में रखी गयी है। इस रिपोर्ट के संदर्भ में देश में कुपोषण के समक्ष चुनौतियों को बताते हुए इसके समाधान की भी चर्चा कीजिए।
(शब्द-250)

नोट :
13 नवम्बर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(c), 2(a) और 3(b) होगा।

Committe